हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ, हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँII Bhajans Bhakti Songs

हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ,
हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँII

चहुँ दिस में कहुँ ठौर नाही मोहें ,
मोरे पीछे पीछे , आवत तोरी अँखियाँ ,
हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ II

मेरो मन मोदिर में ऐसो बसो है ,
मोहे हर पल लुभावत तोरी अँखियाँ ,
हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ,

त्रिभुवन में नाही कोऊ है ऐसो ,
जैसो तीर चलावत तोरी अँखियाँ ,
हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ II

भवसागर में भटक रहा हूँ ,

काहे नाही , पार लगावत तोरी अँखियाँ ,
हे कान्हा मोहें, बहुत सतावत तोरी अँखियाँ II

भजन रचना : ज्योति नारायण पाठक
वाराणसी

Source:
https://www.bharattemples.com/hey-kanha-mohe-bahut-satawat-tori-akhiya/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw